एक टुकड़ा गायब

एक टुकड़ा गायब

लेखक : जूलिया डोनल्डसन

हिंदी : दीपक थानवी

दादाजी को चित्रखण्ड पहेली पसंद है । इस पहेली में किसी चित्र के टुकड़ों को जोड़ कर उसे पूर्ण बनाया जाता है । मैं जब भी अपने दादाजी के घर जाती हूं तब हम दोनों मिलकर एक पहेली तो हल कर ही लेते हैं । पिछले हफ्ते हम ने पहेली को हल करके एक घोड़ा बनाया था ।

" यह घोड़ा कितना सुन्दर है न, जेन ?" दादाजी ने कहा । मैंने जवाब नहीं दिया । मुझे घोड़ों से डर लगता है । मुझे डर था कि कहीं वे मुझे काट न लें या मुझ पर अपनी लात न चला दें ।

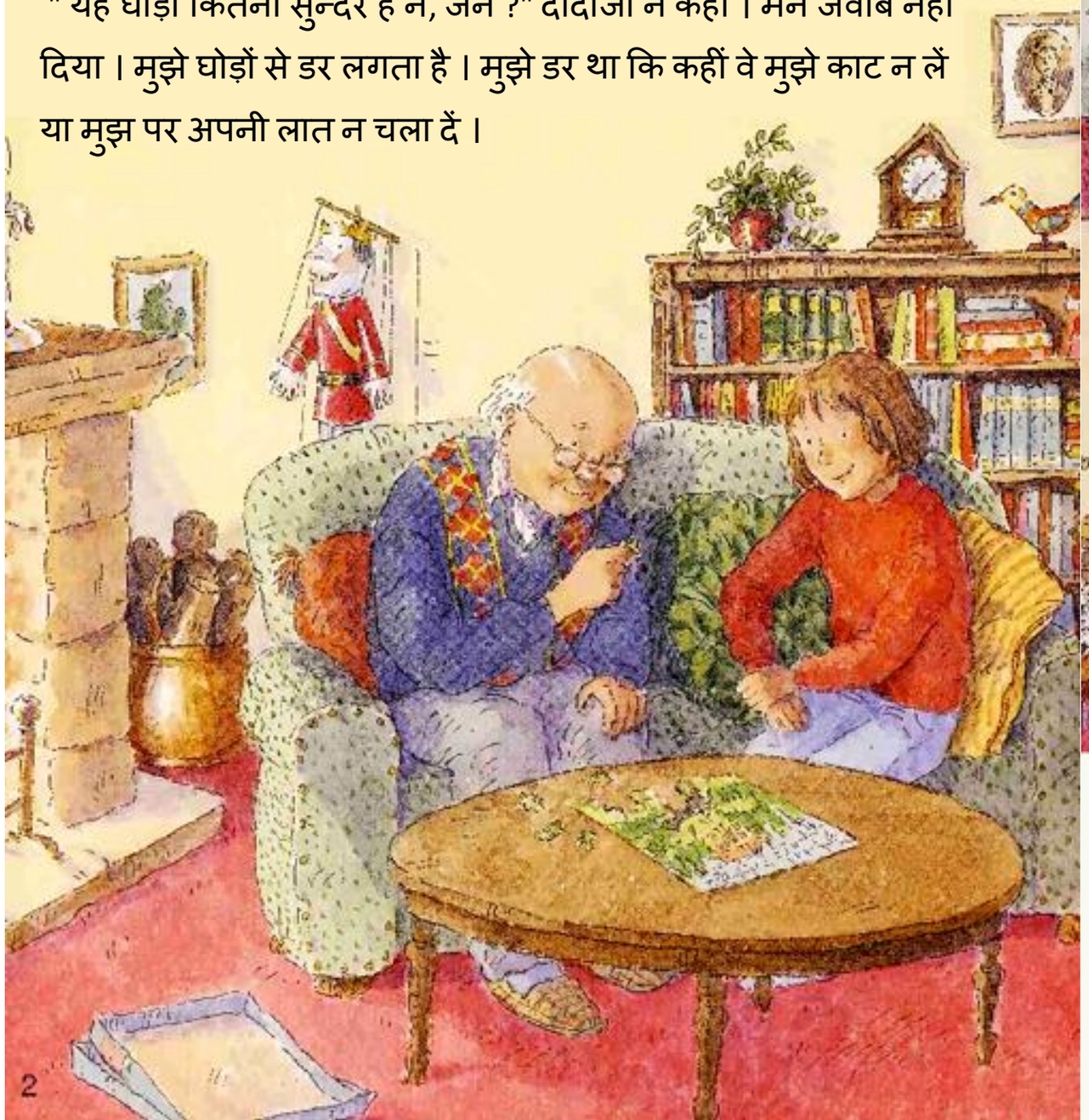

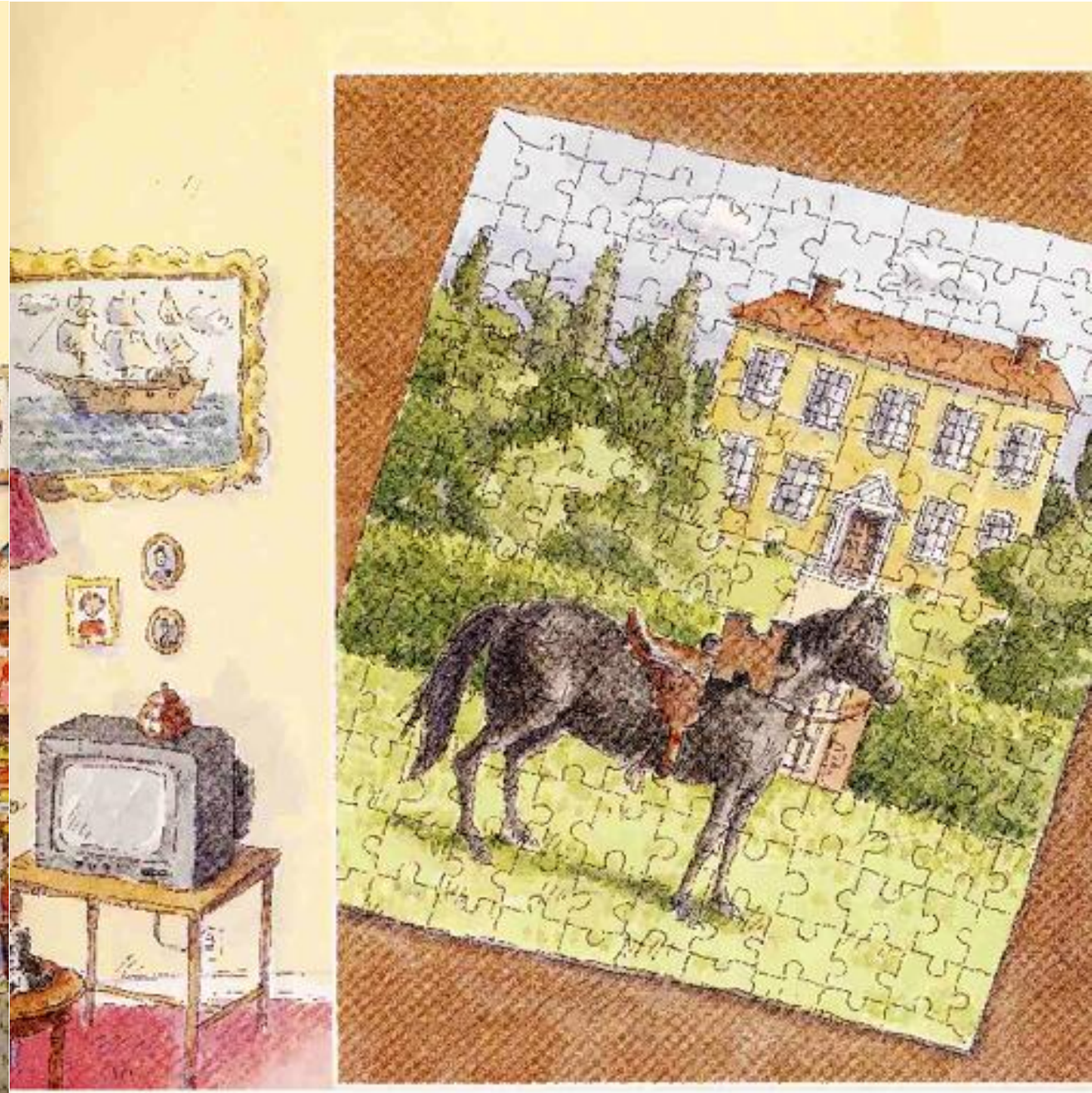

हम दोनों जने पहेली हल करते-करते चित्र को देख रहे थे । उसमें एक पुराने मकान के बाहर एक घोड़ा खड़ा था । उस मकान की खिड़कियां बहुत ऊंची थीं । दादाजी ने कहा कि यह मकान तो दिखने में वैसा ही है जिसमें मेरे दादाजी रहा करते थे ।

हमने पहेली को लगभग पूरा हल कर दिया था।
" एक टुकड़ा गायब है," दादाजी ने कहा।

मुझे मेज के नीचे एक टुकड़ा मिला तो था लेकिन वो लाल रंग का था। वह दिखने में दादाजी के गलीचे की तरह लाल रंग का था और बहुत बड़ा भी।

" यह यहां नहीं आएगा," मैंने कहा। मैंने पहेली की खाली जगह पर अपनी अंगुली रखी।

और फिर कुछ अजीब हुआ। मैंने अपनी अंगुली के नीचे घने बालों को महसूस किया, और पूरा कमरा गोल-गोल घूमने लग गया। मुझे चक्कर आने लग गए और मैंने अपनी आंखें बंद कर दी।

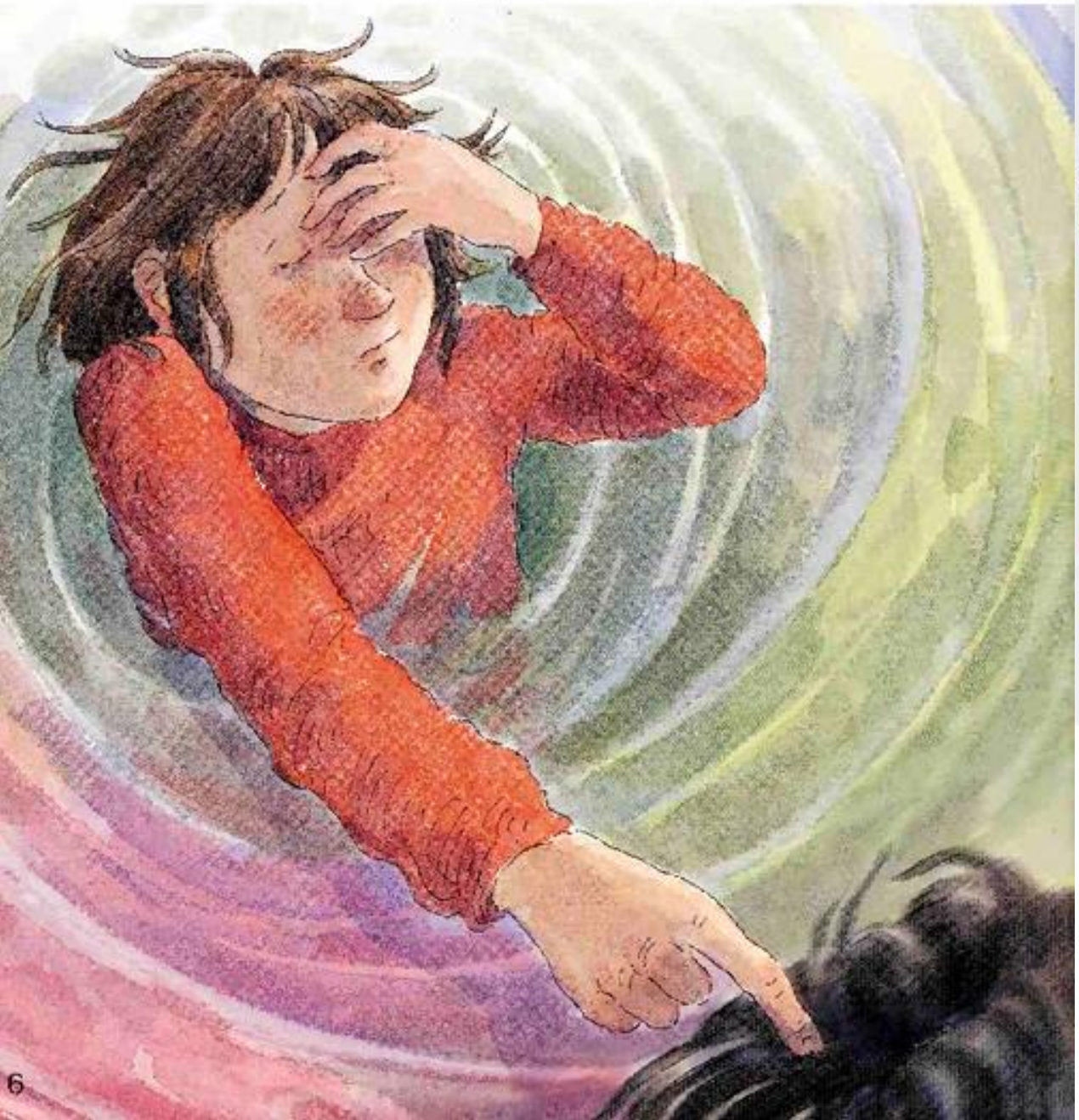

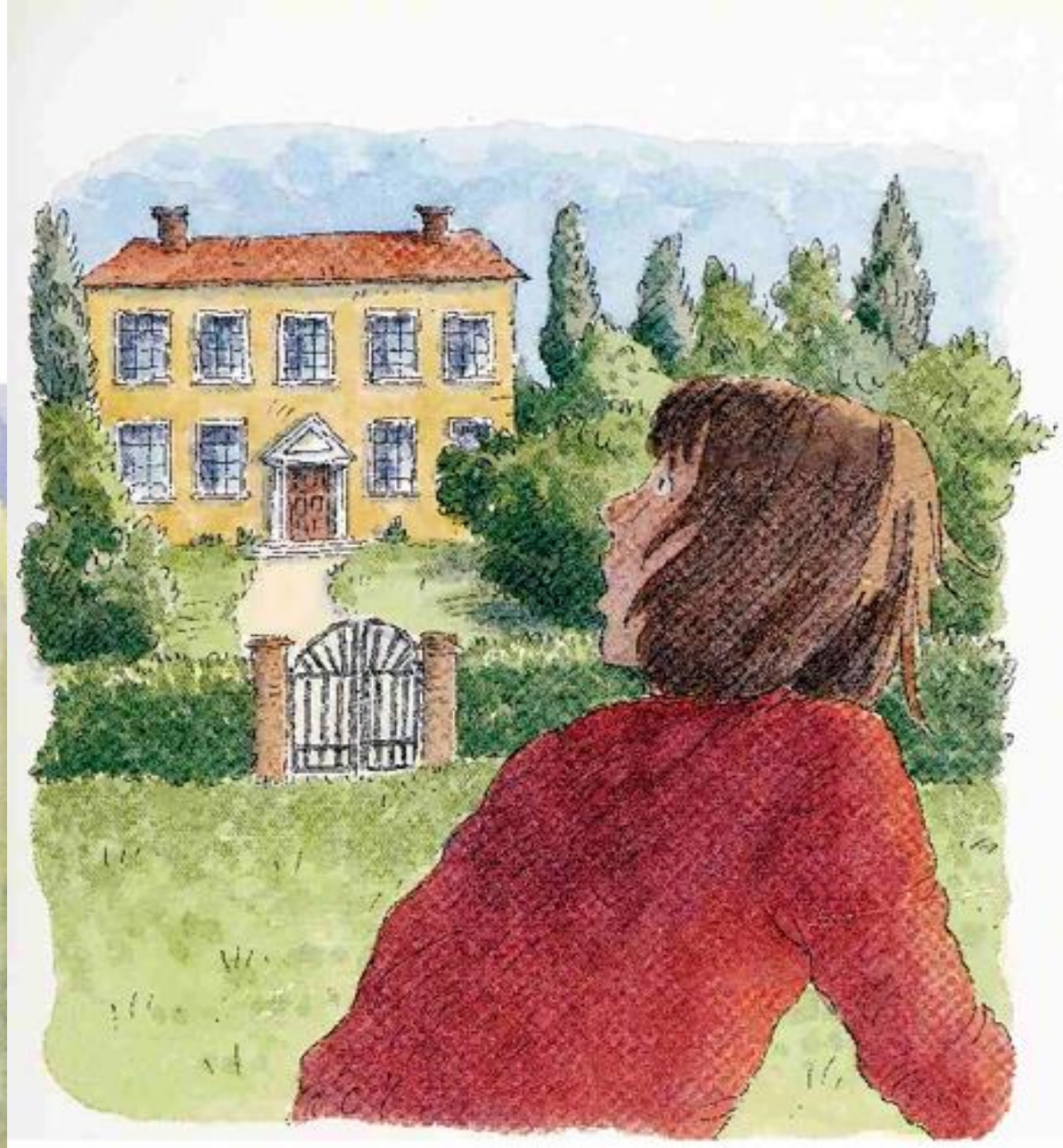

जब मैंने अपनी आंखें खोली, मैंने ऊंची खिड़कियों वाले एक पुराने मकान को देखा। यह मकान वैसा ही दिख रहा था जैसा कि दादाजी की पहेली में था।

यह सब क्या हो रहा था?

मेरे हाथों ने किसी के काले घने बालों को पकड़ रखा था। यह बाल घोड़े की गर्दन पर थे और मैं घोड़े की पीठ पर बैठी थी ! मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था !

मैंने अपना सिर नीचे किया और एक औरत को देखा जिसने कोई अजीब पोशाक पहन रखी थी । वह गुस्से में लग रही थी ।

" इस घोड़े पर से उतरो !" उसने जोर से कहा ।

मैं फुर्ती से घोड़े की पीठ से उतर गई ।

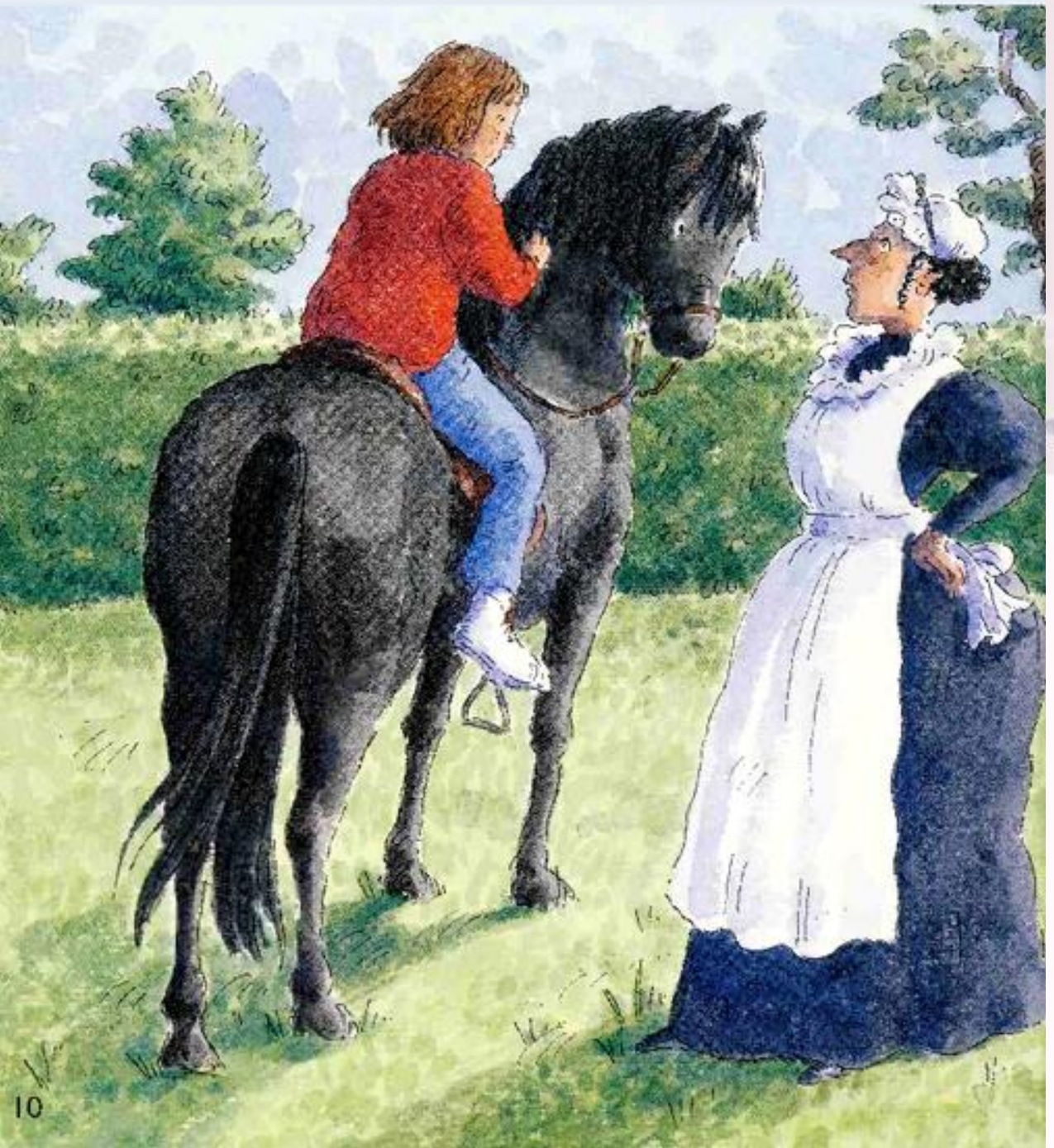

" तुम जरूर घुड़शाला में काम करने वाले नए लड़के हो," उसने कहा । " मेरे साथ आओ ।"

मुझे यह तो मालूम था कि घुड़शाला में घोड़ो को रखा जाता है । लेकिन क्या मैं घुड़शाला में काम करने वाले लड़के जैसी दिख रही थी ? क्या वह यह नहीं देख सकती थी कि मैं एक लड़की हूं ? वह औरत मुझे कुछ घुड़शालाओं में ले गई । उसने एक बड़े सफेद रंग के घोड़े की ओर इशारा किया, और मेरे हाथ में सफाई करने वाला ब्रश पकड़ा दिया । मुझे यह समझ नहीं आ रहा था कि मैं अब क्या करूं ? मुझे उस बड़े घोड़े से डर लग रहा था । लेकिन मुझे ज्यादा डर उस औरत से लग रहा था ।

" मैं जल्दी ही वापिस आऊंगी," उस औरत ने कहा । और फिर वह चली गई ।

मैंने घोड़े की त्वचा को ब्रश से साफ करना शुरू कर दिया । उसने न तो मुझे काटा और न ही मुझे मारा । वह शांत खड़ा था । अब मुझे पहले जितना डर तो नहीं लग रहा था, लेकिन अभी भी मैं बहुत घबराई हुई थी । मैं कहां थी ? क्या मैं दादाजी की पहेली के अंदर थी ?

कुछ देर बाद, वह औरत वापिस आई ।
" मेरे साथ अंदर चलो," उसने कहा । " मैं तुम्हारे लिए दोपहर का भोजन लाई हूं ।"

वह मुझे एक बड़े रसोईघर में ले गई । वहां कोई पुराने ज़माने का एक चूल्हा पड़ा था । उसने मेरे हाथों में रोटी और पनीर थमा दिए ।

रसोईघर के दरवाजे पर एक गोल कुंडी थी । उस औरत ने कुंडी को घुमाकर दरवाजा खोला । दरवाजे के बाहर एक लड़का खड़ा था ।

" मैं घुड़शाला में काम करने वाला लड़का हूं," लड़के ने कहा । औरत ने पहले उस लड़के को देखा, फिर उसने मेरी ओर देखा । वह औरत फिर से बहुत गुस्से में लग रही थी । अब तो कोई मेरी मदद करो !

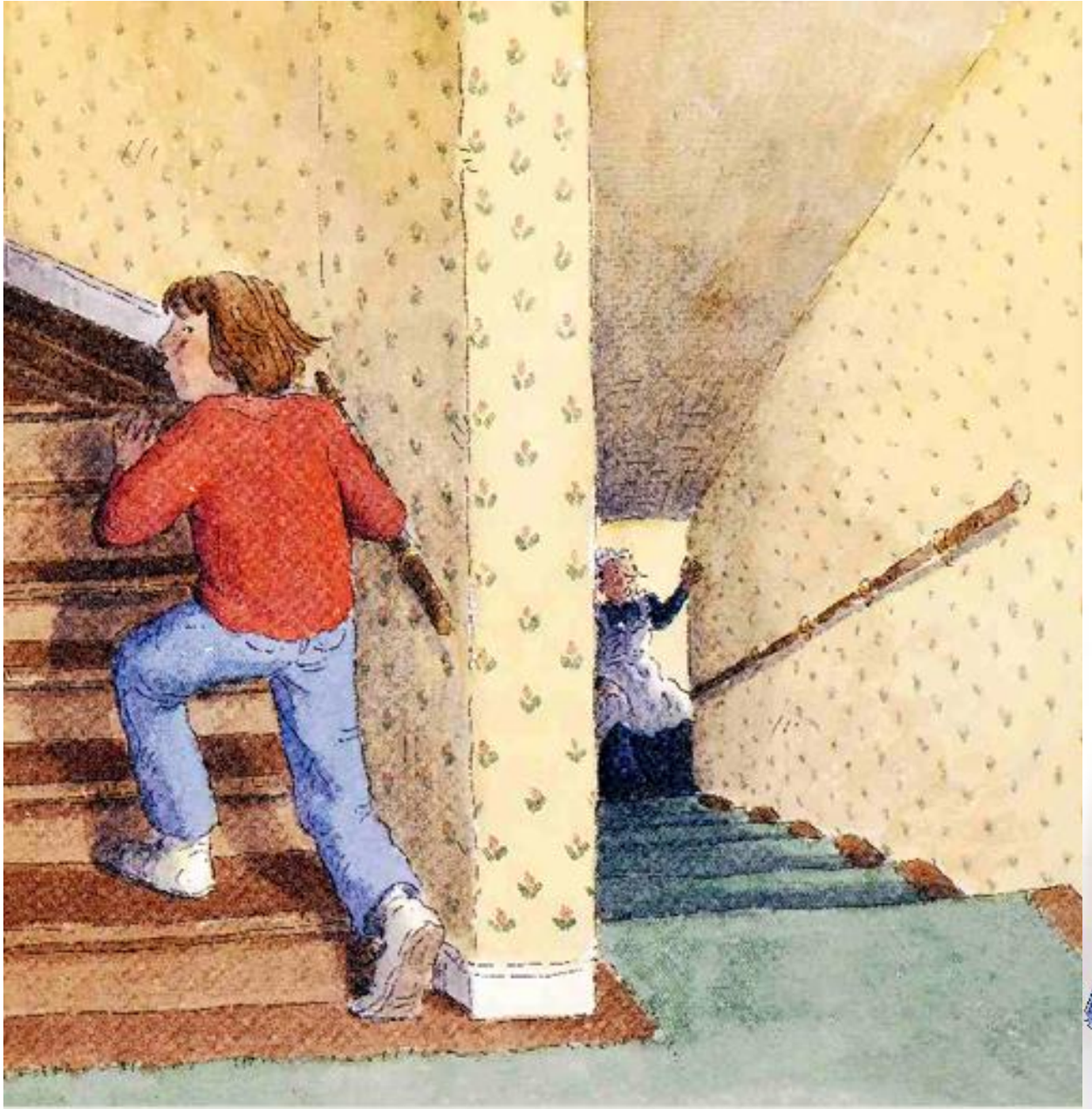

मैं रसोईघर से बाहर भागी और सीढ़ियां चढ़ने लगी ।
वह औरत मेरा पीछा कर रही थी । मुझे उसके सीढ़ियों पर पड़ते कदमों की आवाज आ रही थी । मैं सीढ़ियां चढ़कर दालान में भागी । फिर किसी कमरे का दरवाजा खोला और जल्दी से अंदर घुस गई ।

मैं शान्त खड़ी थी । मैंने उस औरत के कदमों की आवाज सुनी । उसके कदम कमरे से दूर जा रहे थे । हाश ! मैं बच गयी थी ।

मैंने कमरे के चारों ओर देखा । वहां एक पलंग था जिसके चारों ओर परदे लगे हुए थे ।
अचानक एक आवाज आई, " हेलो ! " और किसी के हाथ ने परदे को अंदर खींच लिया ।

पलंग पर एक लड़का बैठा था । वह बीमार लग रहा था । उसके पूरे चेहरे पर लाल धब्बे थे ।

" तुम्हें मुझ से दूर चले जाना चाहिए," उसने कहा ।

" नहीं तो तुम्हें भी चेचक का रोग हो जाएगा ।"

मैंने कहा, " मुझे पहले चेचक हो चुका है । अब मुझे नहीं होगा ।"

" अच्छा," लड़के ने कहा । " मैं बहुत ऊब गया हूं। मैंने इस चित्रखण्ड पहेली को लगभग पूरा कर लिया है ।"

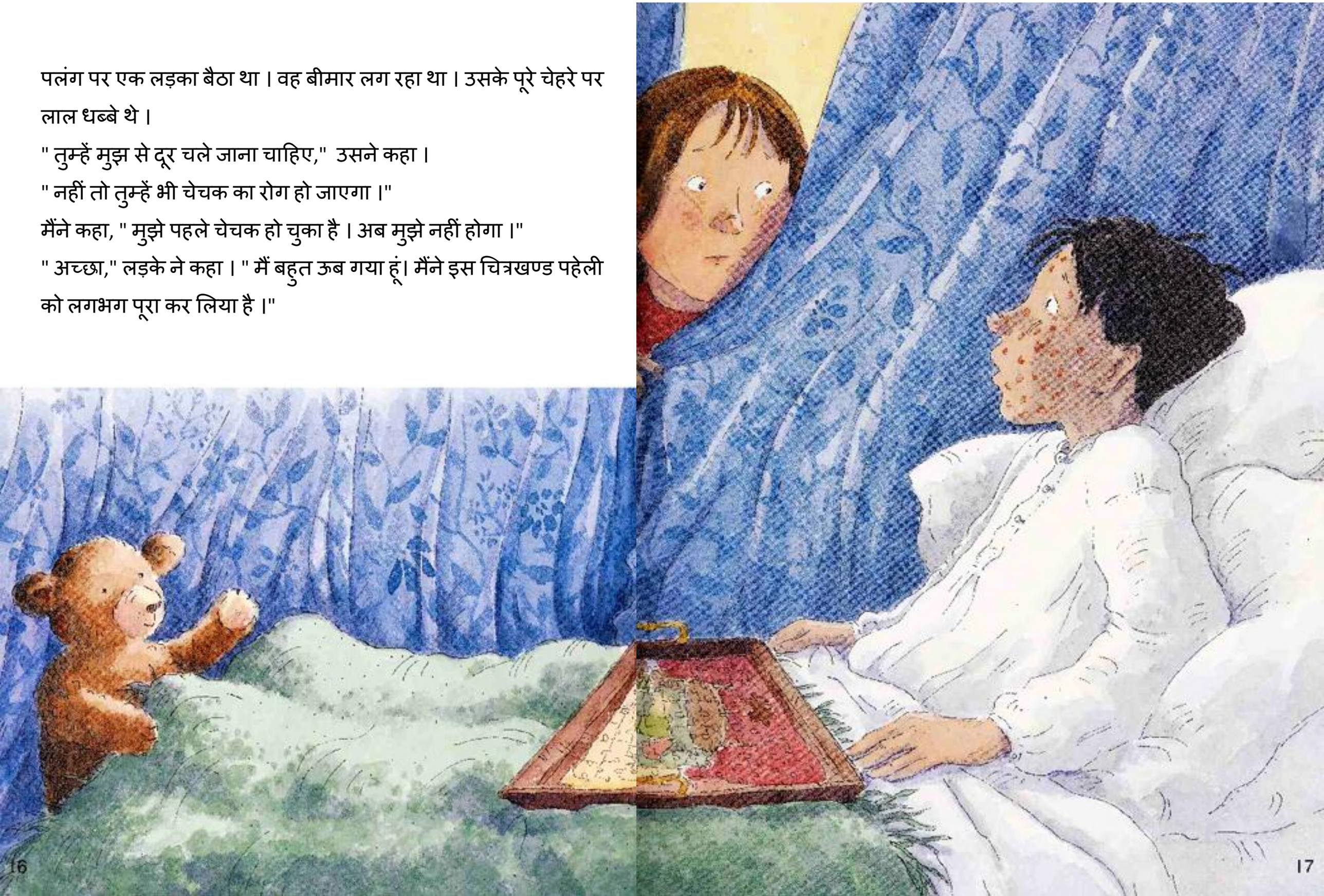

उस पहेली में कोई कमरा था ।

" यह कमरा तो हूबहू मेरे दादाजी के कमरे जैसा है,"
मैंने कहा ।

" यह कमरा तो अजीब दिख रहा है," लड़के ने कहा ।

" और तुम खुद भी अजीब लड़की हो ।"

मैंने सोचा तो था कि यह लड़का अजीब दिखता है
लेकिन मैंने ऐसा उसे कहा नहीं ।

मैंने पहेली को हल करने में लड़के की मदद की ।

लेकिन आखिरी टुकड़ा, पहेली की खाली जगह पर
बैठ नहीं रहा था ।

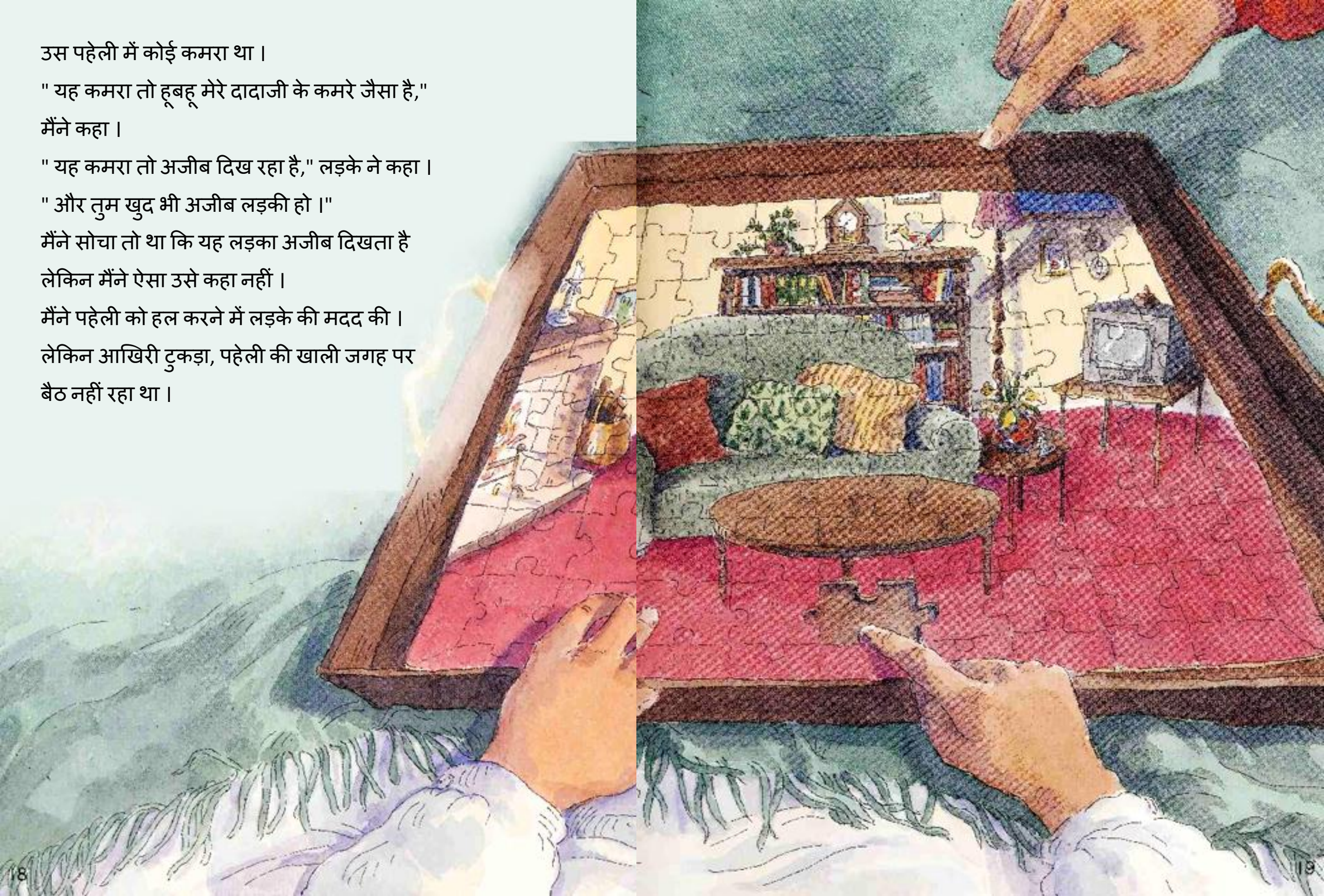

" मुझे एक बड़े लाल रंग के टुकड़े की जरूरत है," लड़के ने कहा ।
" लेकिन मेरे पास तो एक छोटा काले रंग का टुकड़ा ही बचा है ।"
उसने वह टुकड़ा मुझे दे दिया ।

मैंने अपनी जेब से बड़ा लाल रंग का टुकड़ा निकाला ।
यह वही टुकड़ा था जो दादाजी की पहेली में काम नहीं आया था ।
" इसे उपयोग करके देखो," मैंने कहा ।

मुझे फिर से उन कदमों की आवाज सुनाई दी । दरवाजे की कुंडी गोल घूमी । दरवाजा खुला और वहां वही औरत खड़ी थी !
" ठहरो !" मैंने कहा । " अभी इस टुकड़े को खाली जगह पर मत रखो ।"

पहेली की खाली जगह पर मैंने अपनी अंगुली रखी ।
हां ! मैं अब गलीचे को महसूस कर सकती थी । लड़के का कमरा गोल-
गोल घूमने लग गया और मैंने अपनी आंखें बंद कर दी ।

जब मैंने अपनी आंखें खोली, तब मैं अपने दादाजी के कमरे में थी !
वह घोड़े वाली पहेली अभी भी वहीं थी । लेकिन अभी तक भी एक टुकड़ा गायब था । मैंने अपनी जेब में हाथ डाला और वह छोटा काले रंग का टुकड़ा निकाला । फिर मैंने पहेली की खाली जगह पर उसे रख दिया ।

मैंने कहा, " अरे वाह ! पहेली पूरी हुई ! "

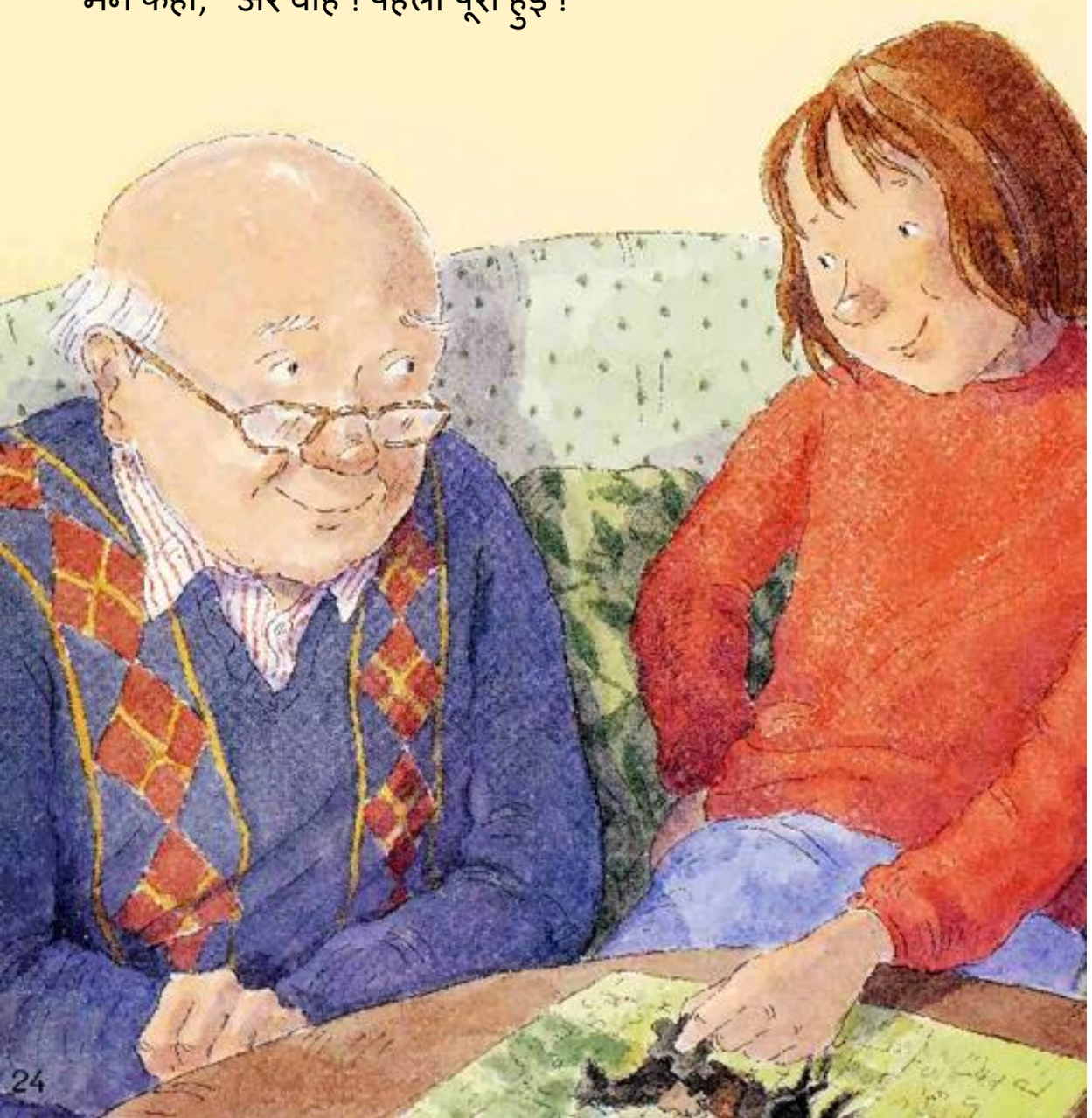

समाप्त